Research Paper Education

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंध

प्रो.सुशील कुमार शैली | हिन्दी विभाग एस.डी कॉलेज, बरनाला के.सी रोड़, बरनाला (पंजाब)148101

KEYWORDS

स्त्री-पुरुष संबंधों से संबंधित बहुत सी कहानियां हमें प्राचीन ग्रंथों में मिल जाती हैं जो जायज़ या नाजायज़ रिश्तों की तुला पर तोली जाती हैं | इस तुला का आधार क्या है ? यह बात सोचने की है | इन संबंधों के मापदण्ड निर्धारित कौन करता है ? समाज | क्या समाज द्वारा स्वीकृत संबंध को जायज़ और न स्वीकृत संबंध को नाजायज़ ठहरा देना उचित है ? क्या संबंधों का निर्वाह कर रहे दोनों व्यक्ति की इच्छा का महत्त्व है ? क्या स्त्री-पुरुष को संबंधों को अपनाने और त्यागने का अधिकार है या नहीं ? इस लहज़े से देखा जाए तो स्त्री को संबंधों को न तो अपनाने का अधिकार था न ही त्यागने का | भले ही ग्रंथों से कुछ छिट-पुटे उदाहरण दे कर इस बात को गलत साबित किया जाता है | समकालीन समय में संबंधों के विविध रूप लिव-इन-रिलेशनशिप, समलैंगिकता जैसे संबंध इसी प्रवाह की धारा परिणाम हैं जिसे जायज़ नाजायज़ की तुला पर अभी तौला जा रहा है | साहित्य में विशेष कर आधुनिक विधाओं कहानी, उपन्यास, आत्मकथा में स्त्री-पुरुष के इन्हीं संबंधों को विविध दृष्टियों से रेखांकित किया जा रहा है | महिला व पुरुष कथाकार दोंनों अपने-अपने दृष्टिकोण से स्त्री-पुरुष संबंधों को निर्धारित करने का प्रयत्न कर रहे हैं |

हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों का प्रतिपादन मुख्यत: दो स्तरों पर किया जाता है-पारिवारिक स्तर पर, सामाजिक और मानवीय स्तर पर | राजेन्द्र यादव ने अपने लेखन में स्त्री-पुरुष संबंधों को पारिवारिक स्तर पर रेखांकित किया है | स्त्री-पुरुष संबंधों को पारिवारिक स्तर पर समझने के लिए उनकी सामाजिक परिस्थितियों को भी दृष्टि में रखना पड़ता है | राजेन्द्र यादव के उपन्यासें में प्रेम को स्त्री-पुरुष संबंधों की स्थापना के आधार के रूप में दर्शाया गया है | करुणा, दया, की भांति प्रेम भी भावात्मक मुल्यों की श्रेणी में आता है | स्त्री-पुरुष संबंधों को जोड़ने वाले अर्थ, काम तथा सामाजिक आवश्यकताओं में प्रेम को सर्वोपरि माना जाता है | स्त्री-पुरुष के प्रेम संबंधों को दो रूपों में हम देख सकते हैं - विवाह सापेक्ष प्रेम संबंध, विवाह निरपेक्ष प्रेम संबंध स्त्री-पुरुष संबंधों का टूटना और टूटने के बाद फिर बनने की तलाश राजेन्द्र के उपन्यासों की कथावस्तु का केन्द्रीय स्वर है | पारस्परिक संदर्भों से अलग हटकर उन्होंने इन संबंधों को रेखांकित किया | "सारा आकाश" उपन्यास में पति-पत्नी के बीच की संवादहीनता की स्थिति बनी रहती है | इस में राजेन्द्र यादव बतलाते हैं कि हमारा समाज पुरुष पुरधान रहा है | स्त्री की अस्मिता को आज भी स्वीकारा नहीं जाता | पुरुष ने अपने दंभ के कारण स्त्री को सदा नकारा साबित किया है | एक लड़की अपने मन में न जाने कितने इंद्र धनुषी कल्पनाओं को समेटे आती है | प्रभा भी वैसे ही आई पर समर ने उसे दिया केवल तिरस्कार, अपमान | पर जब सब बातें साफ हो जाती हैं, तब उनके स्नेह को भी उपन्यासकार ने बहुत अपनेपन से बांधा है | इस में मध्यवर्गीय जीवन की विषमताओं का चित्रण भी किया गया है | संयुक्त परिवार के लोग पति पत्नी के संबंधों को बनाने बिगाड़ने में कितना दखल देते हैं | दहेज न दे पाने के दुष्परिणाम क्या होते हैं, आदि प्रश्नों के उत्तर में समर पत्नी प्रभा के चरित्र को रखा गया है | "उखड़े हुए लोग" में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से प्रभावित स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण किया गया है | इस उपन्यास में लेखक स्वतंत्र भारत में रूढ़ि-परंपराओं का उन्मूलन करने निकले शरद और जया की कथा का चित्रण करते हैं | जया-शरद प्रेम करते हैं, पर अपनी शर्तों पर प्रेम को वह नितांत वैयक्तिक अनुभूति मानते हैं | उन्हें ऐसा लगता है कि जैसे समाज व्यवस्था से इसका कोई सरोकार नहीं होना चाहिए | वह दोनों घर से जाने का निर्णय लेते हैं | दोनों ही बिना विवाह किए साथ रहने का प्रयोग करते हैं क्योंकि उनकी मान्यता है कि व्यक्तिगत फैसलों में या सोच में समाज को बाधक बनने का कोई हक नहीं है | वह विवाह को मात्र एक समझौता मानते हैं जो उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रा में बाधक हो सकता है | "कुलटा" उपन्यास में मध्यवर्गीय खोखले जीवन का यथार्थ चित्रण किया है | उन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों के विविध पहलूओं पर प्रकाश डालते हुए यह बताने का प्रयत्न किया है कि अनेक प्रकार की बंदिसों तथा स्त्री के आचरण के कारण वैवाहिक संबंध कैसे तनावपूर्ण होते होते अंत में टूट जाते है | "शह और मात" में उदय प्रकाश और सुजाता के माध्यम से रचनाकर्म में संगलन सह-यात्रियों के पारस्परिक संबंधों का अंकन है | "अनदेखे अनजाने पुल" में राजेन्द्र यादव ने मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से कुछ स्त्री-पुरुष पात्रों को विश्लेषित कर उन्हें अपनी कथावस्तु के केन्द्र में रखकर नारी के प्रति अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी है | "एक इंच मुस्कान" में अतृप्त महत्वाकांक्षाओं और नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण स्त्री-पुरुष संबंधों के विघटन को जीवंत संदर्भों में दर्शाया है | "मंत्रविद्ध" उपन्यास में प्रेम रूप मांग से बंधे हुये युवक-युवती का चित्रण किया गया है | इस प्रकार राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यास लेखन में स्त्री-पुरुष संबंधों को विविध संदर्भों में विविध स्तरों पर विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है | इन उपन्यासों की कथावस्तु की संरचना स्त्री-पुरुष के विवाह पूर्व व विवाहोत्तर संबंधों की संश्लिष्टता को जीवंत संदर्भों में संप्रेषणीय बनाने के उद्देश्य से की गई है | स्त्री-पुरुष के संबंधों पर युगीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिवेशगत विडंबनाओं के प्रभाव को यथार्थ के धरातल पर दर्शाया गया है | विवाह पूर्व व विवाहोत्तर संबंधों का अंकन करने के संदर्भ में उपन्यासकार ने मनोविज्ञान का सहारा लेकर संबंध-विघटन के कारणों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है | स्वेच्छाचार और दमित वासनाओं की अतृप्ति के कारण नारी की मानसिकता को परखने में उपन्यासकार ने अपनी गहन समझ का परिचय दिया है | इन उपन्यासों में स्त्री-पुरुष के चरित्रों को सामाजिक मान्यताओं तथा परम्पराओं के नीचे दबने नहीं दिया | राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों पर पारिवारिक, सामाजिक जीवन स्थितियों के प्रभाव को देखा जा सकता है | पात्र संयुक्त परिवार में आस्था अनास्था के कारण तनावपूर्ण वैवाहिक संबंधों को झेलने के अभिशप्त होते हैं | राजेन्द्र यादव ने विशेष रूप से स्त्री-पुरुष के वैवाहिक पर प्रकाश डालते हुए तनाव व विघटन के कारणों को जीवंत संदर्भों में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है | अनमेल विवाह के कारण दाम्पत्य जीवन में अभाव, असामंजस्य व प्रेमहीनता की स्थिति को विवेच्य उपन्यासों में चित्रित किया गया है | वैवाहिक जीवन में नैतिकता के अभाव के प्रति चिंता प्रकट की गई है | "सारा आकाश" में पति-पत्नि के संबंधों पर कौमार्य संबंधों के दुष्प्रभाव को दर्शाया गया है | "मंत्रविद्ध" उपन्यास युवा पीढ़ी की कई समस्याओं तथा स्त्री-पुरुष संबंधों को प्रभावित करने वाली ताकतों का जिक्र करते हुए अंर्तजातीय वैवाहिक बंधन में बँधकर अपने भविष्य के निर्माण के लिए स्वतंत्र रूप से मार्ग का चयन करने और समाज की लांछना का तिरस्कार कर अपने वैवाहिक संबंधों को आदर्शमय बनाने में युवा पीढ़ी की चारित्रिक दृढ़ता को प्रस्तुत किया गया है | "सारा आकाश", "कुलटा" और "एक इंच मुस्कान" उपन्यासों में रूढ़िगत सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध क्रांतिकारी कदम के रूप में पुनर्विवाह को समर्थन दिया गया है | उपन्यासकार ने स्त्री-पुरुष संबंधों से जुड़े विविध पक्षों जैसे सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक का अपनी रचनाओं में अंकन किया है | सारा आकाश, एक इंच मुस्कान, मंत्रविद्ध, उखड़े हुए लोग उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों पर कई पारिवारिक तथा सामाजिक स्थितियों, परम्परागत जीवन मूल्यों व आदर्शों के प्रभाव

को दर्शाया गया है | "उखड़े हुए लोग" उपन्यास में जातिगत संस्कारों की भिन्नता को वैवाहिक संबंधों के कारण के रूप में दर्शाया गया है | इसी प्रकार आलोच्य उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों पर महानगरीय परिवेश के हादसों और आर्थिक तंगी के दुष्प्रभावों को भी दर्शाया गया है | युगीन सामाजिक गतिविधियों, आर्थिक विडंबनाओं, धार्मिक व सांस्कृतिक स्थितियों के दबाव के कारण स्त्री-पुरुष के संबंधों को और संघर्ष को चित्रित करना राजेन्द्र यादव के उपन्यासों का उद्देश्य रहा है जिस की प्रस्तुति में उपन्यासकार सफल रहा है |

REFERENCES

राजेन्द्र यादव, सारा आकाश (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1959) | वही, उखड़े हुए लोग (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1956) | वही, शह और मात (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 1959) | वही, अनदेखे अनजान पुल (राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1963) | वही, एक इंच मुस्कान (राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1963) |